आघारकर अनुसंधान संस्थान की पीएचडी छात्रा श्रीमती स्नेहल जमालपुरे ने राष्ट्रीय जैव उद्यमिता प्रतियोगिता (एनबीईसी) 2021 जीती

आघारकर अनुसंधान संस्थान की पीएचडी छात्रा श्रीमती स्नेहल जमालपुरे ने दो लाख रुपये की पुरस्कार राशि के साथ राष्ट्रीय जैव उद्यमिता प्रतियोगिता (एनबीईसी 2021) जीती। श्रीमती स्नेहल जमालपुरे उन 46 फाइनलिस्टों में से थीं, जिन्हें विशिष्टता, मापनीयता और व्यावसायिक संभावित कारकों पर मूल्यांकन किया गया।

स्नेहल और उनकी टीम ने डॉ किशोर पाकनिकर और डॉ ज्युतिका राजवाड़े के मार्गदर्शन में 'मत्स्य सुरक्षा' तैयार की है, जो जलीय कृषि उद्योग को प्रभावित करने वाले वायरल रोगों की पहचान करने के लिए एक तकनीक है।

वैश्विक स्तर पर वायरल बीमारियों से भारी आर्थिक नुकसान होता है जो अरबों में होता है। मत्स्य-सुरक्षा किसानों को 30 मिनट से भी कम समय में साइट पर मछली के संक्रमण का पता लगाने और उपचारात्मक उपाय करने में मदद करेगी। साथ ही, इसकी मोबाइल फोन आधारित कार्यक्षमता निकटवर्ती किसानों, सरकारी एजेंसियों और अन्य हितधारकों को आसन्न खतरे के बारे में सचेत करेगी।
एनबीईसी देश के सबसे उत्कृष्ट व्यावसायिक विचारों का एक राष्ट्रव्यापी वार्षिक प्रदर्शन है। यह C-CAMP द्वारा आयोजित किया जाता है, जो BIRAC क्षेत्रीय उद्यमिता केंद्र के तहत जैव प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार द्वारा वित्तपोषित है।
डॉ. तस्लीमारिफ सैय्यद, सीईओ और निदेशक, सी-कैंप; डॉ मनीष दीवान, रणनीतिक साझेदारी और उद्यमिता विकास के प्रमुख, बीआईआरएसी; और श्रीमती जी.के. कृपालिनी, महाप्रबंधक, बायोटेक कर्नाटक इनोवेशन एंड टेक्नोलॉजी सोसाइटी, इलेक्ट्रॉनिक्स, सूचना प्रौद्योगिकी, व्यवसाय और विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, कर्नाटक सरकार ने विजेताओं की सराहना की और उन्हें बीमारी के बोझ को कम करने, फसल की उपज बढ़ाने और जैव अर्थव्यवस्था में योगदान करने के लिए नवाचार जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया।

****